



3. परिवर्तन और परिवर्द्धन लाने की कला (The Art of Reforming, Refreshing and Developing)

बहुत-से मनुष्य ऐसे होते हैं जो अपने जीवन में परिवर्तन लाना नहीं जानते। उन्हें अपने संस्कारों को बदलने की कला नहीं आती। चाहते हुए भी वे अपने स्वभाव को नहीं बदल पाते और इसलिए वे परेशानियों से घिर जाते हैं। परन्तु योग ही एक ऐसी कला है जिसके द्वारा मनुष्य के जीवन की चढ़ती कला हो जाती है। योगी के सामने जीवन का एक लक्ष्य सदा स्पष्ट रूप में रहता है; इसलिए वह उस लक्ष्य से प्रेरित होकर वैसे लक्षण भी धारण करता है। उसे जीवन की मंज़िल और मार्ग की स्मृति रहती है। इसलिए उसके कदम-कदम में परिवर्तन, प्रगति और पदमों की कमाई होती है। उसकी मन रूपी आँख के सामने फ़रिश्ते की सूरत अथवा श्रीनारायण की मूरत घूमती रहती है, इसलिए वह वैसी ही सीरत बनाने के पुरुषार्थ में लगा रहता है और उसमें एक दिन सफल होता है, क्योंकि कहावत भी है कि 'मनुष्य के मन में जैसा चित्र रहता है वैसा ही उसका चरित्र बनता है' (As you think so shall you become)।

योगी सदा यह याद रखता है कि मैं 'ला मेकर' (Law-maker) अर्थात् विधायक तथा 'पीस मेकर (Peace-maker) अर्थात् शान्ति स्थापक परमात्मा की सन्तान हूँ। इसलिए, मुझे 'ला ब्रेकर' (Law-breaker) अर्थात् 'कानून-तोड़' का काम नहीं करना है और न ही मुझे शान्ति भंग करनी है। बल्कि वह स्वयं को एक शान्तिदूत मानकर आचरण करता है, इसलिए वह माया के वशीभूत नहीं होता। उसे इस बात का ध्यान रहता है कि "मैं ईश्वरीय कुल का हूँ इसलिए मुझे कोई आसुरी कर्तव्य नहीं करना है।" जो मनुष्य योगी नहीं है उसके सामने न तो फ़रिश्ता या देव-तुल्य बनने का लक्ष्य है, न ईश्वरीय विधि-विधान के अनुसार तथा नियम और कायदे के अनुकूल कार्य करने की चेष्टा है। तब भला वह अपने जीवन में परिवर्तन कैसे ला सकता है? वह तो काम, क्रोध आदि से विकृत संस्कारों के वशीभूत होकर रहता है और दिनोंदिन पतन की ओर ही जाता है। उसके मन में योगी के समान सच्ची और स्थायी शान्ति ही नहीं होती। इसीलिए वह दूसरों को रिफ़ेश (Refresh; तरोताज़ा) भी नहीं कर सकता। उसके जीवन में नवीनता ही नहीं आती बल्कि वह पुरानी ही परिपाटी पर चलता है। इसलिए वह दूसरों में भी खुशी, उमंग और तरंग नहीं ला सकता और उनके जीवन को नहीं मोड़ सकता। जिसके जीवन में इन्कलाब (परिवर्तन) नहीं वह दूसरों को ज़िन्दाबाद भी नहीं कर सकता।

दूसरों के जीवन में परिवर्तन वह ला सकता है जिसमें मुख्य रूप से छः बातें हों— (1) दूसरों की खूबियों को देखना और उन खूबियों पर खड़ा करके उन्हें अच्छे कामों में लगाना और अच्छाई में प्रवृत्त करके उनकी बुराई निकालते जाना (2) उन्हें अपने साथ मिला लेना; प्रेम से अपना बना लेना और स्वयं में उनका विश्वास

बिठाकर, उन्हें स्नेह देकर, उनके अवगुण को मैत्री भाव से हर लेना (3) उन्हें अपने से आगे रखना (4) उनके कार्य की यथोचित सराहना करके, 'वाह-वाह' करके उन्हें हिम्मत दिलाना और आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना। (5) अपने ऊँचे विवेक द्वारा विवेकयुक्त रीति (In a convincing manner) से उनकी विचारधारा को पलटना (6) अपने हरेक कार्य में अलौकिकता के द्वारा उन्हें अलौकिक बनाना।

हमने अपने इस आधुनिक जीवन में पिताश्री अर्थात् प्रजापिता ब्रह्मा जी के जीवन में इन सभी विशेषताओं को देखा और अनुभव किया है। यों तो इस कलियुगी संसार के हरेक नर-नार के जीवन में सावन की अँधेरी रात के काले बादलों की कालिमा है परन्तु उस कालिमा में भी बिजली की कोई-कोई रेखा भी है अवश्य। पिताश्री हरेक के जीवन में गुण को ध्यान में रखकर किस प्रकार हरेक के जीवन को योगयुक्त बनाने में लग जाते, यह देखते ही बनता था। फिर उसकी थोड़ी ही सफलता पर वे उसे प्रोत्साहित करके उसे आगे बढ़ाने में लग जाते, बल्कि यहाँ तक भी कह देते कि 'अमुक बात में यह मुझ से भी आगे है।' इस प्रकार अपने स्नेह के आधार पर वे सद्भावना की युक्ति से दूसरों के जीवन में शीघ्र ही परिवर्तन लाने की कला में निष्णात थे क्योंकि वे स्वयं योग की कला से युक्त थे।

जो मनुष्य योगी न हो वह तो दूसरों को भी अपने कुसंग से कुमार्ग पर ही लगाने का निमित्त बन सकता है। वह न मनुष्यात्माओं में परिवर्तन ला सकता है और न ही योगयुक्तों की संख्या में परिवर्द्धन कर सकता है।
